SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

"नेतृत्व में बुद्धिमत्ता की भूमिका "

डा॰. पुष्पा देवी, सहायक प्रोफेसर, आकाशदीप महिला, महाविद्यालय, मानसरोवर, जयपुर

आमुख

साधारणतः किसी भी परिवार, निकाय, संगठन या समूह एवं विभिन्न स्तरों पर किसी एक व्यक्ति की प्रमुखता को देखकर ही संभवतः नेतृत्व की अवधारणा को समझा जा सकता है। नेतृत्व कर्ता उस परिवार, निकाय या संस्था के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्य करता है, सभी लोगों को उनकी क्षमता के अनुसार कार्य करने के लिए अभिप्रेरित करता है। कभी-कभी वर्ग, संगठन में कार्यशैली, विचारों, क्षमताओं आदि के संबंध में असहमति उत्पन्न होती है जिससे वर्ग विशेष के विकास में बाधाएं उत्पन्न हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो अपनी बौद्धिक चातुर्यता से सभी को एकमत करने में सक्षम हो सके व संस्थान, निकाय, संगठन पर नियंत्रण करके उसके उद्देश्यों की पूर्ति कर सके। ऐसे व्यक्ति के नेतृत्व में विकास हो सके, उसे संगठन का नेता कह सकें, उसकी बुद्धिमत्ता ज्ञान मानवीय अभिप्रेरणा को पूरा करता हो तथा निकाय के सदस्यों की अभिलाषाओं को पूरी करता हो। वह अपनी अंतःशक्तियों की खोज का करके संस्था के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकें।

मुख्यतः विद्यार्थी जीवन में नेतृत्व की भूमिका का संचार किया जाता है। विद्यार्थी जीवन में ही नेतृत्व की कार्यशैली से उनको अवगत कराया जाता है तथा अध्यापक शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को भावी जीवन में नेतृत्व करने की क्षमता को विकसित करने में सहायता करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि नेतृत्व में बुद्धिमता की भूमिका काफी हद तक परिवार, संस्था, निकाय एवं संगठनों के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सहायक होती है। एक अच्छे नेतृत्व कर्ता को अपनी बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ अपनी वाणी एवं विचारों के आदान-प्रदान हेतु अपनी भाषा एवं शब्दों का चुनाव करके ही वैचारिक अभिव्यक्ति प्रकट करनी चाहिए तत्पश्चात ही वह एक सफल नेतृत्वकर्ता बुद्धिमान व्यक्ति कहलाता है। वह जिस संस्था एवं निकाय का नेतृत्व करता है उस निकाय व संस्था का विकास लाभकारी होता है। एक नेतृत्व विहीन समाज, परिवार या संस्था का विकास असंभव है नेतृत्व की कला ने ही मनुष्य प्रजाति को विकसित और प्रगतिशील बनाया है। नेतृत्व को समझने के लिए हमें उसके अर्थ से अवगत होना अति आवश्यक है।